चीन के साथ सैन्य मोर्चा तथा भारतीय रक्षा क्षेत्र की उपलब्धियाँ

गाँधीजी राय

__lkjk’k__ भारत और चीन का संबंध प्रारंभ से ही संदेहों और संभावनाओं के बीच चलता रहा है। 1954-55 में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और चीनी प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई के बीच संपादित __iap’khy__ संधि में भले 'हिंदी चीनी भाई-भाई' के नारे से उस समय का आकाश गुंजा हो, लेकिन अच्छे संबंधों की संभावनाओं के पीछे चीनी साजिश एवं षड्यंत्र के चलते दोनों देशों के संबंध आज बेहद तनावपूर्ण और संदेहों के घेरे में हैं और कभी भी दोनों देशों के बीच हिंसक युद्ध हो सकते हैं। इस आलेख में यह बताया गया है कि __Mkdyke fookn__ में दोनों देशों की सेनाओं के बीच __73__ दिनों की तनातनी के बाद भारत के सकारात्मक कूटनीतिक पहल के बावजूद चीन ने कभी भी भारत पर विश्वास नहीं किया। इस आलेख में सैन्य मोर्चे पर भारत और चीन की स्थिति के साथ-साथ यह बताने का प्रयास किया गया है कि रक्षा क्षेत्र के मामले में आज के नए भारत की कितनी प्रगति और उपलब्धियाँ हैं। आज भारत सरकार __ujn eknh__ के कुशल नेतृत्व में पूरे देश तथा उसके हर भाग की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

भूमिका

1949 में चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक प्रमुख घटना थी। अमेरिका द्वारा साम्यवाद विरोधी रुख अख्तियार किए जाने के बावजूद चीन में साम्यवाद की विजय उसके लिए बहुत बड़ा सदमा था। उस समय भारत-चीन संबंध आज की तरह एशियाई राजनीति की एक बहुत बड़ी घटना थी। 1954-55 में दोनों देशों के बीच संपादित **iap’khy** संधि के बावजूद 20 अक्टूबर 1962 को भारत की उत्तरी सीमा पर चीन ने आक्रमण करते हुए 24 घंटों के अंदर ही **Mkyk** तथा **f[k teku** की भारतीय चौंकियों को छीन लिया। 25 अक्टूबर 1962 को चीनियों ने **edegku j[kk** से 14 मील दक्षिण में **Rokx** पर भी अधिकार जमा लिया। 21

नवंबर 1962 को एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा कर चीन ने भारत के साथ बहुत बड़ा धोखा किया। तब से लेकर आजतक भारत और चीन के संबंध संदेहों और अविश्वासों के बीच संचालित हैं। आज दोनों देश अपने-अपने सैन्य मोर्चे की तैयारियों में लगे हैं। विदेश मंत्री **, l- t;'kdj** ने दोनों देशों के रिश्ते को सबसे खराब दौर की स्थिति कहा है। भारतीय सेना के करीब 50 हजार जवान पूर्वी लद्दाख में विभिन्न पर्वतीय स्थलों पर शून्य से नीचे तापमान पर पूरी सतर्कता और युद्ध की तैयारी के साथ डटे हुए हैं।[1] दोनों पक्षों के बीच विभिन्न स्तरों पर कई दौर की बातचीत हो चुकी है, लेकिन सीमा पर जारी गतिरोध का कोई ठोस समाधान नहीं निकल पाया है। चीन की तरफ से लगभग इतनी ही संख्या में **ih,y,** के जवान तैनात हैं।[2] उल्लेखनीय है कि चीन एक तरफ वार्ता का दिखावा कर रहा है तो दूसरी तरफ वह सीमा पर लगातार बुनियादी सैन्य ढाँचे को विकसित कर रहा है।

दोनों देशों के संबंधों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई और हरसंभव तरीकों से अपने पड़ोसियों के साथ संबंध सुधारना चाहा। 1949 में चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई, जो युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय राजनीति की एक प्रमुख घटना थी। यह अमेरिका के लिए एक बहुत बड़ी घटना थी, क्योंकि वह साम्यवाद विरोधी (containment of communism) की नीति पर चल रहा था। आज भी वैश्विक स्तर पर अमेरिका चीन को अपना दुश्मन मानता है। भारत ने हरसंभव प्रयास से चीन के साथ अपने संबंधों को मधुर बनाना चाहा। 1954-55 में चीनी प्रधानमंत्री **pkÅ-,u-ykbZ** तथा भारतीय प्रधानमंत्री **tokgjyky usg:** द्वारा संपादित **iap'khy** संधि के बाद भले दोनों देशों के संबंध 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के नारे से मधुर तो हुए, लेकिन 20 अक्टूबर 1962 को चीन द्वारा भारतीय सीमाओं पर अकस्मात आक्रमण से दोनों देशों की मैत्री शत्रुता में बदल गई। आज भी भारत के एक बड़े भूभाग पर चीन अधिकार जमाए हुए है। दोनों देशों के बीच व्यावहारिक रूप से मान्य सीमा **eSdegksu js[kk** है जिसकी स्वीकृति अप्रैल 1914 में भारत–चीन और तिब्बत के प्रतिनिधियों के शिमला सम्मेलन में दी गई थी। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सरकार की ओर से शिमला सम्मेलन में भारत सचिव **gsujh eSdegksu** ने भाग लिया था। उस सम्मेलन में तिब्बत को **nks** भागों– आंतरिक तिब्बत और बाह्य तिब्बत में विभाजित कर दिया गया जिस पर **rhuksa** प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किया और इसी को **eSdegksu js[kk** कहा गया। जहाँ तक **yík[k lhek** का संबंध है, भारत और चीन के बीच किसी संधि का उल्लेख नहीं मिलता। इस संबंध में भारत सरकार की मान्यता है कि व्यावहारिक दृष्टि से जिस सीमा तक भारत और चीन का अपना नियंत्रण रहा है और जिसे भारत हमेशा से अपने नक्शे में दर्शाता रहा है, वही परंपरागत **lhek js[kk** है। कश्मीर की उत्तरी सीमा का उल्लेख करते हुए अधिकारियों ने 1866 में चीन

को स्पष्ट लिखा था कि इसकी पूर्वी सीमा 80° पूर्वी देशांतर है। इस आलेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि **vDlkbphu** भारतीय सीमा के अंतर्गत है और यही ऐतिहासिक परंपरागत सीमा है। कश्मीर राज्य के राजस्व विभाग के कागजात से भी इस बात की संपुष्टि होती है कि कश्मीर की सरकार ही आक्साईचीन के व्यापारिक मार्गों की रक्षा और मरम्मत करती आई है।[3] लेकिन, चीन सुनियोजित ढंग से सीमा विवाद को उग्र बनाता रहा और कहता रहा कि दोनों देशों के मध्य कभी भी सीमाओं का निर्धारण नहीं हुआ। 12 जुलाई 1962 को **xyoku ?kkVh** की भारतीय चौकी को चीनियों ने घेरे में ले लिया और 20 अक्टूबर 1962 को उसके द्वारा भारत पर आक्रमण से दोनों देशों में युद्ध प्रारंभ हो गया। तब से लेकर अबतक भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर दिसंबर 2019 तक **22** दौर की निष्फल वार्ताएँ होने के बावजूद स्थिति आज काफी गंभीर हो गई है। भूटान की सीमा पर **Mkdyke** को लेकर 16 जून 2017 से 27 अगस्त 2017 तक दोनों देशों की सेनाओं के बीच 73 दिनों की तनातनी[4] समाप्त होते ही प्रधानमंत्री **ujsnz eksnh** की पहल पर दोनों देशों में संबंध सुधारने और आर्थिक सहयोग बढ़ाने हेतु उनकी चीनी प्रधानमंत्री **'kh ftufix** से अनौपचारिक वार्ताएँ 5 सितंबर 2017 को **f'k;keu** में संपन्न नौवें **fcDl f'k[kj** सम्मेलन[5] के दौरान और 27-28 अप्रैल 2018 को **oqgku** में होने के बावजूद चीनी हठधर्मिता के चलते कोई समाधान नहीं निकला। रक्षा मामले के विशेषज्ञ अवकाश प्राप्त मेजर जनरल **v'kksd egrk** का मानना है कि चीन सीमा विवाद का समाधान होने नहीं देना चाहता है। 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाए जाने पर भारतीय संसद में गृह मंत्री द्वारा लद्दाख और अक्साईचीन के संबंध में दिए गए बयान के बाद चीन ने अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए इसे 'अस्वीकार' बताया था और लद्दाख के केंद्र शासित राज्य बनाए जाने के बाद कड़ा प्रतिरोध जताया था।[6] **Mkdyke fookn** के बाद भले भारत ने कूटनीतिक प्रयास से चीन से संबंध सुधारना चाहा, लेकिन डोकलाम विवाद से चीन चिड़ा हुआ है और अपने बढ़ते वर्चस्व पर खतरा मान रहा है।

गलवान घाटी में भारत और चीन के बीच सैन्य झड़प (15-16 जून 2020)

भारत-चीन संबंधों में गंभीर तनाव की स्थिति जून 2020 में उस समय उत्पन्न हो गई जब पूर्वी लद्दाख क्षेत्र में गलवान घाटी (Galwan Valley) में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अतिक्रमण को लेकर दोनों देशों की सेनाएँ आपस में भिड़ गईं। 15-16 जून 2020 की मध्यरात्रि में गलवान क्षेत्र में हुई हिंसक झड़प में **,d duZy** सहित **20** भारतीय सैनिक शहीद हो गए। चीनी सेना के भी 47 जवान हताहत हुए। उल्लेखनीय है कि गलवान घाटी प्रारंभ से ही भारत के नियंत्रण में रही है। उस पर कब्जे के लिए चीन ने 1962 के युद्ध में भी प्रयास किया था किंतु यहाँ भारत का नियंत्रण बना रहा। 5 मई 2020 को भी **phuh ihiqYl vkehZ** ने इस क्षेत्र में घुसपैठ की थी और उसके

बाद चीन ने इसे अपना क्षेत्र बताना शुरू कर दिया था। इस मुद्दे पर दोनों देशों के वरिष्ठ सैन्य कामांडरों की बैठक 6 जून 2020 को हुई थीं जिसमें दोनों देशों की सेनाएँ **okLrfod fu;a=.k js[kk** से पीछे हटने को सहमत हो गई थीं। तत्पश्चात् सोची-समझी रणनीति और योजना के तहत चीनी सैनिकों ने समझौते का उल्लंघन करते हुए 15-16 जून की रात्रि में गलवान क्षेत्र पर अपना दावा ठोककर वास्तविक नियंत्रण रेखा को लेकर दोनों पक्षों में चल रही बातचीत को पेचीदा बना दिया। दोनों देशों के बीच हुई सैनिक झड़प मुख्यतः **iRFkjckth** तथा **ykBh MaMk** के द्वारा ही हुई। उल्लेखनीय है कि दोनों देशों के बीच सीमा पर हथियार न चलाने के लिए संपन्न एक समझौते के तहत ही भारतीय सैनिकों ने इस संघर्ष में हथियार का इस्तेमाल नहीं किया। त्वरित कार्यवाही करते हुए 16 जून को ही तीनों सेनाध्यक्षों व चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ के साथ रक्षा मंत्री **jktukFk flag** ने बैठक की।[7] चीनी रवैये पर रोष व्यक्त करते हुए भारतीय विदेश मंत्री **Mk- ,l t;'kadj** ने अपने चीनी समकक्ष **okax ;h** के साथ टेलीफोन पर 17 जून 2020 को वार्ता के दौरान स्पष्ट किया कि इस घटनाचक्र का गंभीर प्रभाव दोनों देशों के आपसी संबंधों पर पड़ेगा।[8] सीमा पर हुए इस टकराव के मामले में कठोर रुख अपनाते हुए प्रधानमंत्री **ujsanz eksnh** ने अगले ही दिन एक बयान में कहा कि भारतीय जवानों का यह बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्होंने चीन को स्पष्ट संकेत दिया कि भारत की शांति की कोशिशों को चीन कमजोरी न माने।

चीन के आक्रामक तेवर

हिमालयी क्षेत्र में 4057 किमी लंबी भारत-चीन सीमा पर चीन की दबंगई के चलते दोनों देशों के बीच सीमा विवाद का हल निकलने की उम्मीद को धक्का लगा है। 1986-87 के बाद भारत-चीन सीमा तनाव तब चरम पर पहुँच गया था जब चीन की सैन्य टुकड़ियाँ अरूणाचल प्रदेश के **lenksjksax pw** क्षेत्र में नियंत्रण रेखा पार की थीं, जिसके कारण हलकी झड़पें शुरू हो गई थीं। इसकी प्रतिक्रिया में भारत ने अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम और लद्दाख क्षेत्र में चीन द्वारा भूभाग हड़पने के मंसूबों को नाकामयाब करने के लिए सुरक्षा की तैयारियाँ तेज कर दीं। सीमा उल्लंघन की हालिया घटनाएँ और वहाँ अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती में 1962 के युद्ध के पूर्व के हालात की पुनरावृत्ति नजर आती है। भारत के एक पूर्व सेना प्रमुख के अनुसार वर्ष 2009 में चीन द्वारा सीमा का उल्लंघन जून में 21 बार, जुलाई में 20 बार तथा अगस्त में 24 बार किया गया। चीन द्वारा सीमा पार हस्तक्षेप की घटनाओं का बढ़ता ग्राफ दो सालों में लगभग दूना हो गया। 2006 में सीमा में घुसपैठ की 140 घटनाएँ हुई थीं, जबकि 2008 में 270।[9] जिस प्रकार चीन के साथ भारत का रक्षात्मक रुख आज (2020 में) दिखाई पड़ रहा है, उसी प्रकार 1954 के **iap'khy le>kSrs** में तिब्बत क्षेत्र के मसले पर भारत ने कूटनीतिक लाभ गँवा दिया था। तिब्बत मसले पर भारत को जो भी थोड़ी-बहुत बढ़त हासिल हुई थी, उससे भारत 2003 में हाथ धो बैठा जब उसने तिब्बत

को चीन के स्वायत्त क्षेत्र मानने के अपने रुख से पलटते हुए इसे चीन के भाग के रूप में स्वीकार कर लिया था। यह तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की एक बहुत बड़ी भूल साबित हुई और उस समय यही कहा गया कि उन्होंने जवाहरलाल नेहरू द्वारा तिब्बत के मामले में की गई गलती पर मुहर लगा दिया। इसी का नतीजा और हैरानी की बात यह है कि अब मुद्दा तिब्बत के संबंधों के आधार पर अरूणाचल प्रदेश पर चीन के दावों के रूप में सामने आ रहा है। 1962 में मुद्दा अक्साईचीन था, जबकि आज मुद्दा अरुणाचल प्रदेश खास तौर पर इसका **rokx {k=** बन गया है। प्रश्न है कि यदि चीन यह मानता था कि तवांग तिब्बत का अंग होने के चलते चीन का हिस्सा है तो फिर उसने 1962 के युद्ध में इस गलियारे पर कब्जा जमाने के बाद इसे मुक्त क्यों कर दिया था, जबकि लद्दाख क्षेत्र में इस युद्ध में जीते गए भूभाग उसने अपने कब्जे में रखा ? सामरिक मामलों के विशेषज्ञ **cãk pykuh** ने लिखा है, ''अनेक कारणों से चीन की दबंगई अन्य राष्ट्रों की तुलना में भारत के लिए अधिक चिंता का विषय है। एक तो चीन भारत में सीधे सैन्य दखल पर उतर आया है। वह भारत के लिए खतरे भी खड़े कर रहा है, जिनमें पाकिस्तान के साथ दीर्घकालीन सामरिक गठजोड़ भी शामिल है।––– वास्तव में सैन्य पत्रों के अनुसार चीन में यह धारणा मजबूत हो रही है कि 1962 सरीखे त्वरित हमले से जीत हासिल कर अपने प्रतिद्वंद्वी का कद छोटा किया जा सकता है''।[10] **cãk pykuh** का यह मानना सही है कि ''यदि भारत फिर से विश्वासघात का शिकार बनने से बचना चाहता है तो उसे चीन के संदर्भ में अपनी नीति को अधिक यथार्थपरक बनाना पड़ेगा। भारत को खुद को धोखे में रखने से बचना होगा, प्रतिरक्षात्मक क्षमताओं को बढ़ाना होगा और कूटनीतिक लाभ हासिल करने का प्रयास करना होगा''।

चीन के आक्रामक तेवर का पर्दाफाश तब होता है जब वह भारत के इलाकों में घुसकर पत्थरों पर 'चीन' लिख जाता है, स्थानीय भारतीय को मारपीट कर खदेड़ भगाता है और उनके रिहायशी इलाकों पर कब्जा कर लेता है। जम्मू एवं कश्मीर सरकार द्वारा केंद्र को भेजी अपनी रिपोर्ट में कहा है कि चीन इंच–इंच कर भारतीय क्षेत्रों पर कब्जा कर रहा है। सीमा पर बड़े पैमाने पर चीन द्वारा बंकर आदि का निर्माण कार्य किया जा रहा है। वह ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध निर्माण के तमाम दावों और प्रतिदावों के बीच **;kjyx&lkXik unh ifj;kstuk** आगे बढ़ाने में लगा हुआ है। खुफिया विभाग के पूर्व अधिकारी **,e- d- /kj** ने कहा कि ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन की बाँध निर्माण परियोजना से उत्तरी भारत के अलावा बांग्लादेश भी प्रभावित होगा। *'इंस्टीट्यूट ऑफ डिफेंस रिसर्च एंड एनालिसिस'* (Institute of Defence Research and Analysis) के अनुसार, ब्रह्मपुत्र नदी पर बाँध के निर्माण का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय सीमा से गुजरनेवाली नदी से जुड़ा हुआ है, लेकिन चीन ने बाँध निर्माण के संबंध में किसी भी पक्ष से चर्चा नहीं की। उल्लेखनीय है कि चीन ने 1997 में संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय जल संसाधनों

के गैर-नौवहन उपयोग संधि का भी अनुमोदन नहीं किया है। अब चीन की नीति में तिब्बत का उतना ही महत्त्व हो गया है जितना कि ताइवान का है। अरुणाचल प्रदेश के मसले को उठाकर चीन इसे भी ताइवान सरीखा पेश करने का प्रयास कर रहा है। चीन के अनुसार, अरुणाचल नया ताइवान है, जिसका चीनी राष्ट्र में पुनर्एकीकरण करना होगा। भारत-चीन संबंधों में तिब्बत हमेशा से मूल मुद्दा रहा है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि चीन भारत का पड़ोसी भौगोलिक रूप से नहीं रहा है, बल्कि 1951 में बंदूक के बल तिब्बत तक अपना विस्तार करके बना है। आज बीजिंग पश्चिम के उन देशों के साथ कूटनीतिक संबंध खराब करने में नहीं हिचकिचाता है जो **nykb ykek** के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रखना चाहते हैं। चीन के व्यवहार में तीखेपन और आक्रामक तेवर का कारण भारत-अमेरिकी सामरिक एवं रणनीतिक साझेदारियाँ भी हैं जो **ujn ekn dky** में काफी मुखर होकर दिनोंदिन आगे बढ़ रही हैं।

भारत को क्या करना चाहिए ?

चीन के आक्रामक तेवर और उसके भारत को घेरने की नीति से स्पष्ट है कि वह हर उस तरीके का इस्तेमाल कर रहा है जिससे वह भारत पर बढ़त स्थापित कर सके। उसने पाक अधिकृत कश्मीर में अपने हजारों सैनिक तैनात किए हैं। अब गुलाम कश्मीर पर पाकिस्तान के दावे के साथ चीन भी सामने होगा। प्रश्न है कि ऐसे चीनी आक्रामकता के माहौल में भारत को क्या करना चाहिए ? अपनी सुरक्षा को मजबूत बनाए रखने और अपनी विदेश नीति को आजाद रखने की ताकत तभी मिलेगी जब हम अपनी सुरक्षा को आत्मनिर्भर और सुदृढ़ बनाएँगे। इसके लिए हमें खाद्यान्न के साथ-साथ बेहतर तकनीक के विकास के मोर्चे पर पूरी तरह आत्मनिर्भर रहना होगा। चीनी आक्रामकता की बढ़ती हुई घटनाओं में वृद्धि को देखकर उसकी विस्तारवादी नीति स्पष्ट होती है। इस संदर्भ में गंभीरतापूर्वक विचार करते हुए भारत को चीन के साथ अपने आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करते हुए उसके अनुसार तैयार होना भी आवश्यक है। हमें यह यथार्थ स्वीकार करना होगा कि चीन इसलिए आँखें तरेरता रहता है, क्योंकि हमारा आंतरिक ढाँचा कमजोर है। चीन की चुनौती का सामना करते हुए सबसे सशक्त उपाय यही है कि भारत उन कमजोरियों को दूर करे, जो उसके आंतरिक ढाँचे में घर कर गई हैं। चीन एशिया से लेकर अफ्रीका और अमेरिकी महाद्वीप तक अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों का जाल फैला रहा है। ऐसे में पाकिस्तान के सहारे भारत को घेरना और कश्मीर के बहाने भारत के लिए सिर दर्द पैदा करते रहना उसकी रणनीति का प्रमुख हिस्सा है। वह पाकिस्तान को एटमी रिएक्टर देकर पाक-अधिकृत कश्मीर में निर्माण कर रहा है। **ujn ekn** की मजबूत भारत की अवधारणा चीन के बढ़ते इरादों को संतुलित करने के लिए आवश्यक है। 15-16 जून की मध्यरात्रि में गलवान क्षेत्र में हुई झड़प में एक कर्नल सहित 20 भारतीयों की शहादत भारत के लिए बहुत बड़ा सबक है जिसे उसे कभी नहीं भूलना चाहिए।

सीमा पर हुए इस संघर्ष में जवानों के शहीद होने से पूरे देश में रोष की लहर व्याप्त है और देश बदला चाहता है। यही भारत की राष्ट्रीय एकता है।

सीमा पर दोनों देशों के बीच ताजा टकराव ने द्विपक्षीय संबंधों में भारी खट्टास की स्थिति उत्पन्न कर दी है। आर्थिक, वाणिज्यिक, राजनयिक और राजनीतिक संबंधों पर इसके दूरगामी परिणाम पड़े हैं। चीन की कुटिल चालों के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए पूरे देश में चीनी उत्पादों के बहिष्कार का सिलसिला जारी है। आर्थिक मोर्चे पर चीन से निपटने की दिशा में एक पहल करते हुए भारत सरकार ने एक बड़ा फैसला 29 जून 2020 को लेते हुए **fVd-Vkd** सहित चीन के **59 ,II** को प्रतिबंधित कर दिया। **phuh ,II** को प्रतिबंधित करने वाली **byDVkfuDI o Ipuk ik|kfxdh e=ky;** की 29 जून 2020 की विज्ञप्ति में कहा गया कि देश की एकता, अखंडता, संप्रभुता, सुरक्षा, रक्षा व सार्वजनिक व्यवस्था पर खतरा मानते हुए सरकार ने यह फैसला किया। पुनः 2 सितंबर 2020 को **118 ,II** तथा 24 नवंबर 2020 को **43 ,II** पर प्रतिबंध लगाया गया। उल्लेखनीय है कि चीनी कंपनियों के स्वामित्व वाले **,II** को प्रतिबंधित किए जाने के प्रति तीखी प्रतिक्रिया चीन सरकार की ओर से व्यक्त की गई है। यह भी उल्लेखनीय है कि प्रतिबंधित किए गए **phuh ,II** के भारतीय विकल्प भी स्टोर व प्ले स्टोर पर उपलब्ध हैं। **fVdVkd** को टक्कर देने के लिए स्वदेशी **Mitron** ***App*** *rFkk* ***Chingari App*** अच्छे विकल्प बताए जाते हैं। इसी तरह अन्य चीनी **,II** के लिए भी वैकल्पिक एप्स उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इस कार्रवाई से आगे चलकर भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

Pkhu Is fuiVus dh fy, ubl j.kuhfr& भारत और चीन के बीच 1996 में एक **Ihch,e** (Confidence-Building Measures- CBM) समझौता हुआ था जिसके मुताबिक बातचीत के दौरान सिपाही को दूसरे पक्ष के सिपाही की तरफ हथियार नहीं उठाना है। इसके अलावा, किसी प्रकार की घेराबंदी और रुकावट डालने पर पाबंदी जैसे नियम तय किए गए थे। केवल बैनर निकालने की बात तय की गयी थी। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1996 से लेकर 2013 तक इसे लागू करने की कोशिश की गई, लेकिन चीन की तरफ से कई बार नियमों का उल्लंघन किया गया और इस तरह के रवैये की वजह से ये नियम कायदे कामयाब नहीं हुए।[11] चीनी सेना द्वारा अतिक्रमण और उकसावे की वजह से वर्षों से दोनों सेनाओं के बीच तनातनी होती रही है। उनका मानना है कि अब भारत को भी अपने रुख में बदलाव लाना पड़ेगा। तनाव की स्थिति को देखते हुए लद्दाख में फौजी दस्तों की तैनाती बढ़ाई गई है। गाँधीवादी विचारक कुमार प्रशांत ने 1962 के बाद भारत और चीन के बीच लद्दाख की गलवान घाटी में हुई घटना दोनों देशों के बीच सबसे बड़ा मुठभेड़ माना है। भारत सरकार द्वारा 'चीन को अपने पाले में लाने की तमाम कोशिशों के बावजूद आज चीन हमलावर मुद्रा में है। डोकलाम से शुरू हुआ हमला गलवान घाटी तक पहुँचा है और यही चीनी बुखार है,

जो नेपाल को भी चढ़ा है।'[12] कुमार प्रशांत की मान्यता है कि चीनी बुखार उतार कर ही समस्या का स्थायी समाधान हो सकता है।

सैन्य मोर्चे पर आमने-सामने भारत और चीन

Mkdyke fookn (2017) के बाद भारत और चीन की सेनाएँ एक बार फिर आमने-सामने आ खड़ी हुई हैं। लद्दाख के गलवान घाटी और डेमचोक में बढ़ते तनाव के मद्देनजर दोनों देशों की तरफ से सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गयी है। लद्दाख की पैंगोंग झील, सिक्किम के नकुला और लद्दाख में गलवान घाटी और डेमचोक में सेनाओं के बीच झड़पें भी हुई हैं। दुनिया के दो सबसे बड़ी आबादी वाले देशों के बीच 14000 फीट (4270 मीटर) की ऊँचाई पर जारी तनातनी पर दुनिया की निगाहें लगी हुई हैं। पैंगोंग झील सीमा के समीप भारतीय सेना द्वारा सड़क निर्माण और आधारभूत संरचना के विकास पर काम किया जा सकता है। वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास चीन ने इस बार कम-से-कम चार इलाकों में विवाद उत्पन्न कर दिया है। बढ़ते गतिरोध और सेनाओं के जमावड़े के मद्देनजर दोनों देशों के बीच वार्ता भी शुरू हो चुकी है। लेकिन, वार्ता की सफलता चीनी आचरण पर निर्भर है। वह इसे बदलने के लिए कतई तैयार नहीं है, क्योंकि सीमा विवाद को चीन एक रणनीतिक दबाव के हथियार के तौर पर इस्तेमाल करता आया है। वर्ष 2017 में भारत के साथ **Mkdyke xfrjks/k** के बाद से चीनी सेना ने अपने शास्त्रागार का विकास किया है, जिसमें टाइप 15 टैंक, जेड–20 हेलिकॉप्टर और जीजे–2 ड्रोन शामिल हैं, जो ऊँचाई वाले इलाके में उसके लिए लाभकारी स्थिति बनाते हैं। भले ही भारत चीन की सैन्य क्षमता की बराबरी नहीं कर सकता, लेकिन भारतीय सेना उसे **lcd** सिखाने की क्षमता रखती है। चीन के विदेश मंत्री ने भारत-चीन सीमा पर स्थिति के नियंत्रण में होने की बात कही है। इसलिए दोनों देशों के बीच युद्ध की संभावना तो नहीं है। लेकिन, चीन की हरकतों को देखते हुए भारत को सावधान रहने की जरूरत है। भारत को हर स्थिति के लिए अपनी सेना को तैयार रखना चाहिए। इस संबध में मेजर जनरल **v'kksd egrk** का यह मानना सही है कि भारत ने जिस तरह पाकिस्तान के विरूद्ध रक्षा रणनीति अपनाई है, उसी तरह हमें चीन के खिलाफ भी बड़े स्तर पर तैयारी करनी चाहिए।[13] उल्लेखनीय है कि 29-30 अगस्त 2020 की रात एक बार फिर भारतीय सैनिकों और चीनी सैनिकों के बीच झड़प हुई। हालाँकि भारतीय सैनिकों ने इस दौरान न केवल चीन को रोकने में कामयाबी हासिल की बल्कि उन्हें पीछे की ओर खदेड़ भी दिया।[14] **vkbVhchih** (ITBP- Indo-Tibatan Border Police) के कमांडर **vkbch >k** ने बताया कि पूर्वी लद्दाख में **ih,y,** के साथ खूनी झड़प के बाद दोनों देशों के साथ तनाव चरम पर पहुँच गया है। अरुणाचल प्रदेश के संवेदनशील त्वांग सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर जवान हाई अलर्ट पर हैं और आईटीबीपी ने जबरदस्त तैयारियाँ की हैं।[15]

उत्तरी सीमाओं पर चीन पर भारी भारतीय सेना

चीन द्वारा लगातार दी जा रही चुनौतियों के दौर में भारतीय सेना की ताकत का आकलन आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय सैन्य विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय सेना चीन की **ihiYl fycj'ku vkeh** से अपेक्षाकृत अधिक अनुभवी है। दोनों देशों के बीच तनाव के इस दौर में भारतीय वायु सेना द्वारा आपात स्थिति में 6,000 करोड़ रुपये से भी अधिक की लागत से रूस से 21 **fex-29** तथा 12 **,l;w-30 ,edvkb** लड़ाकू विमान खरीदने की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। भारत को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस फ्रांसीसी **jkQy foeku** मिल चुके हैं। कुछ अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों और सैन्य विशेषज्ञों के मुताबिक युद्ध की स्थिति में भारत उत्तरी सीमाओं पर चीन पर भारी पड़ सकता है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय थलसेना हर परिस्थिति में चीनी सेना बेहतर और अनुभवी है, जिसके पास युद्ध का बड़ा अनुभव है भले ही चीन के पास भारत से ज्यादा बड़ी सेना और सैन्य साजो–सामान है, लेकिन आज के परिपेक्ष्य में विश्व में किसी के लिए भी इस तथ्य को नजरअंदाज करना संभव नहीं हो सकता कि भारत की सेना को अब धरती पर दुनिया की सबसे खतरनाक सेना माना जाता है और सेना के विभिन्न अंगों के पास ऐसे-ऐसे खतरनाक हथियार हैं, जो चीनी सेना के पास भी नहीं हैं। धरती पर लड़ी जाने वाली लड़ाइयों के लिए भारतीय सेना की गिनती दुनिया की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में होती है। रक्षा मंत्री **jktukFk flag** ने भी पिछले सात महीनों से पूर्वी लद्दाख में भारत और चीन की सेनाओं के आमने-सामने होने पर चिंता जाहिर की है। हैदराबाद में डिंडीगुल वायु सैनिक अड्डे पर संयुक्त परेड को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ''कोविड-19 महामारी के दौरान चीन के रवैये ने उसके इरादों को जाहिर कर दिया। लेकिन, हमने साबित किया है कि भारत कमजोर नहीं है। यह नया भारत है जो सीमा पर उल्लंघन, आक्रामकता तथा किसी भी तरह की एकतरफा कार्रवाई का मुँहतोड़ जवाब दे सकता है''।[16]

वास्तविक नियंत्रण सीमा पर भौगोलिक स्थिति भारत के पक्ष में

जापान की एक आकलन के अनुसार हिंद महासागर के मध्य में होने के चलते चीन की तुलना में भारत की रणनीतिक स्थिति बेहद महत्त्वपूर्ण है और दक्षिण एशिया में भी भारत ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली है। अमेरिकी न्यूज वेबसाईट **lh,u,u** ने भी अपने प्रतिवेदन में बताया कि आज भारत की शक्ति पहले की तुलना में ज्यादा बढ़ गई है और यदि चीन के साथ भारत का युद्ध हुआ तो भारत का पलड़ा भारी रह सकता है। इसके साथ ही भारतीय सेना ऊँचाई वाले क्षेत्रों में लड़ाई के संबंध में अधिक माहिर है। **ckLVu** में हार्वर्ड केनेडी स्कूल के **cyQj lsVj Qkj lkbal ,.M bVjus'kuy vQs;l** और **okf'kxVu** के एक **vefjdh lqj{kk dsan** के अध्ययन में इसका खुलासा किया गया है। रक्षा विशेषज्ञों की दृष्टि में भारत–चीन की भौगोलिक स्थिति भारत के हित में है। उनका कहना है कि यदि युद्ध हुआ तो तिब्बत के ऊँचे पठार से

उड़ान भरने वाले **t-10** और **t-11** लड़ाकू विमानों में न ज्यादा ईंधन भरा जा सकता है और न ही ज्यादा विस्फोट लादे जा सकते हैं। रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि चीनी वायु सेना आकाश में भारतीय वायु सेना की भाँति अपने विमानों में ईंधन भरने में सक्षम नहीं है। एक अन्य अध्ययन में बताया गया है कि तिब्बत तथा शिनजियांग में चीनी हवाई ठिकानों की अधिक ऊँचाई एवं कठिन भारतीय परिस्थितियों के चलते चीनी लड़ाकू विमान अपने पेलोड और ईंधन के साथ ही उड़ान भर सकते हैं। इससे विपरीत भारतीय लड़ाकू विमान पूरी क्षमता के साथ आक्रमण करने में माहिर हैं। आज की सही स्थिति यही है कि चीन के पास भारत से ज्यादा लड़ाकू विमान होने के बावजूद भारतीय लड़ाकू विमान **l[kkb&30 ,evkbZ** एवं **jkQy** का उसके पास कोई जबाब नहीं है, जो एक साथ 30 निशाने साधने में माहिर हैं। चीन के पास **l[kkb&30 ,ed,e foeku** होने के बावजूद वह एक साथ सिर्फ **nks** ही निशाना साध सकता है। जल, थल और नभ से परमाणु हमला करने में दोनों देशों की क्षमता के संबंध में स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट का मानना है कि भारत की तुलना में चीन ज्यादा ताकतवर है, क्योंकि भारत के 150 परमाणु हथियारों के मुकाबले उसके पास 320 हथियार है। लेकिन, दोनों देशों के बीच 'पहले प्रयोग नहीं' (No First Use) नीति के चलते इनके प्रयोग की संभावना नहीं के बराबर है।

भारतीय नौसेना की बढ़ती शक्ति

भारतीय नौसेना की ताकत दिनोंदिन बढ़ रही है। 2013 में नौसेना में शामिल किए गए **vkbZ,u,l foØekfnR; ;q) ikr** पर तैनात कामोव–31, कामोव–28, हेलीकॉप्टर, मिग–29 के लड़ाकू विमान, ध्रुव, चेतक हेलीकॉप्टरों सहित **rhl** विमान और एंटी मिसाइल प्रणालियों के चलते इसके एक हजार किमी के क्षेत्र में दुश्मन देश के लड़ाकू विमान और युद्धपोत नहीं आ सकते। उल्लेखनीय है कि **59** किमी प्रति घंटा की गति से गश्त लगाने वाला यह युद्धपोत लगातार 100 दिनों तक समुद्र के भीतर विचरण कर सकता है। इसके साथ ही, 2012 में रूस से करीब एक अरब डॉलर के सौदे पर 10 वर्ष के लिए लीज पर ली गई भारतीय नौसेना की नाभकीय ऊर्जा से संचालित पनडुब्बी **vkbZ,u,l&pØ2** परमाणु हमला करने में बहुत आगे है। 43 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पानी के अंदर 600 मीटर गहराई तक **rhu** महीने तक रह सकने वाली यह पनडुब्बी मिनटों में चीन और पाकिस्तान पर परमाणु आक्रमण करने में सक्षम है।

भारत और चीन की सैन्य शक्ति की तुलनात्मक स्थिति

यदि हम भारत और चीन की सैन्य शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन करें तो इसमें काफी अंतर दिखाई पड़ता है। जहाँ भारत का सैन्य बजट 4252 अरब का है वहाँ चीन का सैन्य बजट करीब 17327 अरब का है। चीनी **lSU; cy** में सक्रिय सैनिकों की संख्या जहाँ 23.35 लाख और रिजर्व सैनिकों की संख्या 5.1 लाख है वहाँ भारतीय

lSU; cy में 13.25 लाख सक्रिय सैनिक और 11.55 लाख रिजर्व सैनिक तैनात हैं। जहाँ चीनी थल सेना में 7760 टैंक (2500 टाइप–96, 96ए, 96बी, 2360 टाइप–59, 800 टाइप–63, 500 टाइप–88, 500 टाइप 99, 500 टाइप–99ए, 300 टाइप–69, 300 टाइप–79), 9726 तोपें, 1710 स्वचालित तोपें, 1770 रॉकेट तोपें तथा 33000 बख्तरबंद वाहन हैं, वहाँ भारतीय थल सेना में 4426 टैंक (2410 टी–72, 1650 टी–90, 248 अर्जुन एमके–1, 118 अर्जुन एमके–2), 5067 तोपें, 290 स्वचालित तोपें, 292 रॉकेट तोपें तथा 8600 बख्तरबंद वाहन शामिल हैं। चीन की नौसेना में दो विमानपोत, 36 विध्वंसक पोत, 54 लड़ाकू युद्धपोत, 42 लड़ाकू जलपोत, 76 पनडुब्बियाँ, 220 गश्ती युद्धपोत और 714 समुद्री बेड़े हैं। उसके पास 28 टाइप–054ए, 13 टाइप–053 और दो टाइप–054 युद्धपोत और 18 टाइप–039ए, 17 टाइप–035, 13 टाइप–039, 12 किलो तथा छह टाइप–093 पनडुब्बियाँ हैं, जबकि भारतीय **ukSlsuk** में दो विमानपोत, 11 विध्वंसक पोत, 15 लड़ाकू युद्धपोत, 24 लड़ाकू जलपोत, 15 पनडुब्बियाँ, गश्ती युद्धपोत और 295 समुद्री बेड़े शामिल हैं। भारत के पास युद्धपोतों में छह तलवार, तीन शिवालिक, तीन ब्रह्मपुत्र और तीन गोदावरी श्रेणी के हैं तथा पनडुब्बियों में नौ सिंधुघोष, चार शिशुमार, एक चक्र, एक अरिहंत श्रेणी की हैं। चीनी वायुसेना में कुल 4182 एयरक्राफ्ट हैं, जिनमें 1150 फाइटर एयरक्राफ्ट, 629 मल्टीरोल एयरक्राफ्ट, 270 हमलावर एयरक्राफ्ट, 1170 हेलीकॉप्टर हैं जबकि भारतीय वायुसेना में कुल 2216 एयरक्राफ्ट हैं, जिनमें 323 फाइटर एयरक्राफ्ट, 329 मल्टीरोल एयरक्राफ्ट, 220 हमलावर एयरक्राफ्ट तथा 725 हेलिकॉप्टर सम्मिलित हैं। जहाँ चीन के पास 558 चेंगडू जे–7, 277 शेन्यांग जे–11, 143 शेन्यांग जे–8 फाइटर एयरक्राफ्ट और 266 चेंगडू जे–10, 28 चेंगडू जे–20, 21 चेंगडू जे–15, 24 सुखोई एसयू– 35 एस मल्टीरोल एयरक्राफ्ट हैं वहाँ भारत के पास 245 मिग–21 तथा 78 मिग–29 फाइटर एयरक्राफ्ट और 230 सुखोई एसयू–30 एमकेआई, 45 मिराज 2000, 45 मिग 29 के, नौ एचएएल तेजस मल्टीरोल एयरक्राफ्ट हैं। चीनी सेना के पास 2650 **jkdV iktDVj** हैं, जबकि भारत के पास इनकी संख्या 266 है। इसके साथ ही, चीनी वायु सेना में 3.3 लाख सैनिकों की तुलना में भारतीय वायुसेना में करीब 1.4 लाख सैनिक हैं। इसी प्रकार, चीनी कॉम्बैट एयरक्राफ्ट की संख्या जहाँ करीब 1900 है वहाँ भारत के पास 900 कॉम्बैट एयरक्राफ्ट हैं।

भारत और चीन की सैन्य शक्ति की तुलनात्मक स्थिति से स्पष्ट है कि चीन के पास भारत के मुकाबले में दो गुना लड़ाकू और इंटरसेप्टर विमान हैं और भारत से 10 गुना ज्यादा रॉकेट प्रोजेक्टर हैं। इसके बावजूद, भारत का पड़ला उसपर भारी है, क्योंकि भारतीय लड़ाकू विमान चीन के मुकाबले ज्यादा प्रभावी हैं। पिछले कुछ दशकों में भारत ने चीन से लगी सीमाओं पर कई हवाई पट्टियों का निर्माण किया है जहाँ से भारतीय फाइटर जेट आसानी से उड़ान भर सकते हैं। भारत के राफेल मिराज–2000

और एसयू–30 जैसे जेट विमान किसी भी मौसम और परिस्थिति में उड़ान भर सकने में सक्षम हैं जबकि चीन के जेट विमानों– **t&11** और **,l;&27** में इतनी शक्ति नहीं है। इनके अतिरिक्त, **fpud** और **vikp** जैसे अत्याधुनिक हेलीकॉप्टर भी चीन से जंग में उस पर भारी पड़ेंगे। भारत की शक्तिशाली मिसाइल **cãkl** भी युद्ध का नक्शा बदलने में मददगार हो सकता है, जिसकी रफ्तार 952 मीटर प्रति सेकेंड होने से दुश्मन के रेडार भी इसके सामने फेल हो जाते हैं।

भारतीय रक्षा क्षेत्र की उपलब्धियाँ

नरेंद्र मोदी सरकार भारत तथा उसके प्रत्येक भाग की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कृतसंकल्प है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का यह कहना कि नया भारत आक्रामकता तथा किसी भी तरह की एकतरफा कार्रवाई का मुँहतोड़ जबाव देने में सक्षम है, इस बात की ओर संकेत करता है कि भारत रक्षा क्षेत्र के मामले में हर तरह की मुश्किलों का सामना करने में सक्षम है। भारतीय रक्षा मंत्रालय की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं–

1. *'स्लीनेक्स–20'&* भारतीय नौसेना (Indian Navy) एवं श्रीलंका की नौसेना (Sri Lanka Navy) का संयुक्त वार्षिक द्विपक्षीय समुद्री अभ्यास 'स्लीनेक्स–20' का आठवाँ संस्करण 19 से 21 अक्टूबर 2020 तक त्रिंकामाली श्रीलंका के तट पर आयोजित किया गया।
2. *स्वदेशी रूप से विकसित एंटी रेडिएशन मिसाइल (रुद्रम) का सफलतापूर्वक परीक्षण&* 9 अक्टूबर 2020 को नई पीढ़ी के एंटी रेडिएशन मिसाइल (रुद्रम) का ओडिशा के तट से दूर **0ghyj }hi** पर रेडिएशन परीक्षण सुखोई–30 एमकेआई फाइटर एयरक्राफ्ट से किया गया। इस मिसाइल को 'लॉन्च प्लेटफॉर्म' के रूप में सुखोई एसयू–30 एमकेआई विमान में एकीकृत किया गया है।
3. *डीआरडीओ के लेजर गाइडेड एटीजीएम का सफल उड़ान परीक्षण–* 1 अक्टूबर 2020 को स्वदेशी रूप से निर्मित **,Vhth,e** को लंबी रेंज पर स्थित एक टारगेट को भेदते हुए सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया।
4. *ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण–* 30 सितंबर 2020 को स्वदेशी बूस्टर और एयरफ्रेम सेक्शन के साथ ही कई अन्य 'मेड इन इंडिया' उप प्रणालियों से युक्त सतह से सतह तक मार करने वाली सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल **cãkl** का ओडिशा में आईटीआर, बालासोर से निर्धारित रेंज के लिए सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। उल्लेखनीय है कि मई 2019 में भारतीय वायु सेना ने **cãkl** मिसाइल के हवाई प्रारूप का SU-30 MKI लड़ाकू विमान से सफल परीक्षण किया था।

5. *तेजस एफओसी विमान भारतीय वायुसेना में शामिल–* 27 मई 2020 को वायु सेना स्टेशन सुलूर में तेजस एमके–1 एफओसी विमान को भारतीय वायुसेना में सौंपा गया।
6. *आरएआईडीईआर–एक्स का अनावरण–* 1 मार्च 2020 को **j{kk vuql/kku ,oa fodkl laxBu** (डीआरडीओ) एवं आईआईएससी बैंगलोर द्वारा **jMj&,Dl** (आरएआईडीईआर–एक्स) नामक एक नए विस्फोटक डिटेशन डिवाइस का अनावरण किया गया। रेडर–एक्स में एक दूरी से विस्फोटकों की पहचान करने की क्षमता है।
7. *रक्षा मदों के आयात पर प्रतिबंध–* रक्षा मंत्रालय ने 9 अगस्त 2020 को 101 रक्षा उपकरणों, हथियारों एवं गोला बारूद के आयात को चरणबद्ध तरीके से प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया ताकि आत्मनिर्भर भारत (Make in India) अभियान के तहत इनका विनिर्माण देश में ही किया जा सके।

भारतीय थल सेना

डीआरडीओ द्वारा विकसित टैंकरोधी निर्देशित मिसाइल **ukx** का पोखरण फील्ड फाइरिंग रेंज का 7-18 जुलाई 2020 को सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया। इसमें सभी मौसमों में दिन या रात में दुश्मन के ताकतवर टैंकों को घेरने की शक्ति है। दिसंबर 2019 में भारतीय और नेपाल की सेना के बीच द्विपक्षीय वार्षिक सेनाभ्यास (सूर्यकिरण) कर आयोजन किया गया। 26 मार्च–8 अप्रैल 2020 के बीच भारत और श्रीलंकाई सेना के बीच 14 दिवसीय सैन्याभ्यास (मित्रशक्ति) का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि रक्षा मंत्रालय ने 28 सितंबर 2020 को 2,290 करोड़ रुपये से हथियार एवं रक्षा उपकरण खरीदने के एक प्रस्ताव का अनुमोदन किया। इसके तहत पाकिस्तान एवं चीन की सीमा की निगरानी पर तैनात सैनिकों के लिए अमेरिका से 780 करोड़ रुपये से 72,000 Sig Saner Assault राइफलें खरीदे जाने का भी निर्णय लिया गया है। पैदल सेना के आधुनिकीरण कार्यक्रम के अंतर्गत सात लाख राइफलें, 44,000 हल्की मशीनगनें तथा लगभग 44,600 कार्बाइन खरीदी जा रही हैं।

48 fdeh rd jkt okyh gkfoRtj rksi dk Vªk;y lQy& रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित स्वदेशी **gkfoRtj ,Vh,th,l rksi** का बालासोर में ट्रायल सफल रहा है। एटीएजीएस के फील्ड ट्रालय के दौरान संगठन के वैज्ञानिक और प्रोजेक्ट डायरेक्टर शैलेंद्र वी गढ़े ने बताया कि ये अबतक भारत की सबसे बड़ी ताकत रही बोफोर्स समेत दुनिया की किसी भी तोप से बेहतर है। इसमें काफी तेज माना जाने वाला इजरायल का गन सिस्टम एटीएसओसी भी है। यह 48 किमी तक लक्ष्य साध सकती है। यह तोप भारतीय सेना की 1800 आर्टिलरी गन सिस्टम की जरूरत को पूरा करने में सक्षम है। डीआरडीओ के मुताबित इसके बाद

विदेश से तोपें मंगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। उल्लेखनीय है कि मारक क्षमता ज्यादा होने से युद्ध में दुश्मन के हमले से भी से तोप बचे रहेंगे।[17]

भारतीय वायुसेना के प्रमुख लड़ाकू विमान एवं हेलिकॉप्टर

भारतीय वायुसेना विश्व की सबसे बड़ी चौथी वायुसेना मानी जाती है। फ्रांस के अत्याधुनिक व कहर ढाने वाले **jkQy** विमान और रूस के 'सुपर सुखोई' विमान भारतीय वायुसेना की शोभा बढ़ा रहे हैं। स्वदेश निर्मित लड़ाकू विमान **rtl** का भारतीय वायुसेना में शामिल होने से वायुसेना की ताकत में अभूतपूर्व इजाफा हुआ है। आज करीब 2,000 से अधिक लड़ाकू विमान भारतीय वायुसेना में शामिल हैं। वायुसेना में सम्मिलित प्रमुख लड़ाकू विमान एवं हेलिकॉप्टर इस प्रकार है– **1-** चीता हेलिकॉप्टर **2-** चेतक हेलिकॉप्टर **3**. एमआई–17 वी 5 हेलिकॉप्टर **4-** एमआई–26 हेलिकॉप्टर **5-** एमआई–25/एमआई–35 हेलिकॉप्टर **6-** एवरो फाइटर जेट **7-** डोर्नियर **8-** आईएल–76 **9-** बोइंग C–17 ग्लोबमास्टर **10-** तेजस **11-** फाइटर जेट जगुआर **12-** मिग 21 **13-** मिग–27 लड़ाकू विमान **14-** मिग–29 **15-** मिराज–2000 **16-** एस यू–30 एमकेआई **17-** राफेल **18-** सी 130 जे तथा **19-** एम्ब्राएर।

निष्कर्ष

भारत और चीन दोनों एशिया की बड़ी शक्तियाँ हैं। 1962 के चीनी युद्ध के समय से ही दोनों के संबंध खराब हैं। संबंध सुधारने तथा सामान्य बनाने में सीमा विवाद सबसे बड़ी बाधा है। सीमा विवाद के समाधान के लिए 2020 तक **22** वार्ताएँ हो चुकी हैं और अभी भी दोनों पक्ष वार्ता जारी रखने के पक्ष में हैं। दोनों देशों के बीच आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिए जाने के बावजूद डोकलाम विवाद (2017) के बाद दोनों के संबंधों में गंभीर गिरावट आई है। 29–30 अगस्त 2020 की रात पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग झील के पास चीनी सैनिकों ने 75 दिनों के अंतराल के बाद एकबार पुनः जिस तरह दुस्साहस का परिचय दिया, इससे स्पष्ट हो गया कि चीन पर कभी भी भरोसा नहीं किया जा सकता। चीन की चुनौती का सामना करने के लिए भले ही सैन्य मोर्चे पर खड़ा भारत अपनी बढ़ती सैन्य शक्ति के बुते उसका मुकाबला करने के लिए तैयार है, लेकिन अन्य स्तरों पर भी भारत को सुदृढ़ करके चीन के मुकाबले के लिए तैयार रहना है। सैन्य मोर्चे पर सारी तैयारियों के बावजूद भारत को यह महसूस करना होगा कि देश में शासन-प्रशासन के कामकाज के जो तौर-तरीके रहे हैं, वे प्रगति की राह में बाधाएँ डालने का काम कर रहे हैं। भारत को यह यथार्थ स्वीकार करना होगा कि चीन इसलिए आँखें तरेरता रहता है, क्योंकि हमारा आंतरिक ढाँचा कमजोर है और प्रायः सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार के गंभीर परिणाम सामने आने लगे हैं। चीन की चुनौती का सामना करने के लिए सबसे सशक्त उपाय यही है कि भारत उन कमजोरियों को दूर करे, जो उसके आंतरिक ढाँचे से घर कर

गई हैं। यदि ऐसा नहीं किया गया तो आगे चलकर भारत खुद को चीन के समक्ष अपने को कमजोर पाएगा। चीन एशिया से लेकर अफ्रीका और अमेरिकी महाद्वीप तक अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों का जाल फैला रहा है। ऐसे में पाकिस्तान के सहारे भारत को घेरना और कश्मीर के बहाने भारत के लिए सिरदर्द पैदा करते रहना उसकी रणनीति है और भविष्य में भी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. *दैनिक जागरण* (पटना, 9 दिसंबर 2020), पृ. 17
2. उपरोक्त
3. डॉ. एन. के. श्रीवास्तव : *'भारत की विदेश नीति'*, पृ. 134
4. *दैनिक भास्कर* (पटना, 29 अगस्त 2017), पृ. 13
5. *दैनिक भास्कर* (पटना, 6 सितंबर 2017), पृ. 1
6. मेजर जनरल (रिटा.) अशोक मेहता का आलेख, 'चीन नहीं चाहता सीमा विवाद का हल', *प्रभात खबर* (पटना, 7 जून 2020), पृ. 8
7. *दैनिक जागरण* (पटना, 17 जून 2020), पृ.1
8. *हिन्दुस्तान* (पटना, 18 जून 2020)
9. गाँधीजी राय, *'अंतरराष्ट्रीय राजनीति'*, द्वितीय संस्करण (पटना, भारती भवन, 2014), पृ. 392
10. गाँधीजी राय द्वारा उद्धृत, उपरोक्त, पृ. 393
11. रक्षा विशेषज्ञ अशोक मेहता, रिटायर्ड मेजर जनरल का आलेख, ''चीन से निबटने के लिए नई रणनीति, *प्रभात खबर* (पटना, 19 जून 2020), पृ. 8
12. कुमार प्रशांत का आलेख, 'उतारना होगा चीनी बुखार', उपरोक्त
13. रक्षा विशेषज्ञ अशोक मेहता, रिटायर्ड मेजर जनरल, ''चीन नहीं चाहता सीमा विवाद का हल'', पूर्वोक्त
14. India-China Clash——, hindi.news18.com
15. *आज* (पटना, 27 दिसंबर 2020), पृ. 1
16. *हिन्दुस्तान* (पटना, 20 दिसंबर 2020), पृ. 22
17. *दैनिक भास्कर* (पटना, 20 दिसंबर 2020), पृ. 1